मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

पाक्षिक

Email : mazdoormorcha@yahoo.co.in
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06 /R.N.I. No. 66400/97

दिल्ली में लूटने हेतु बनी बिजली कंपनियां सांसद भड़ाना केवल लफ़्फाजी के लिये 3
ईश्वर नहीं, पूंजीपति वर्ग का चमत्कार संस्कृति के द्वन्द में आधुनिक नारी 4
जिन्हें नाज है हिन्द पर वे कहां है? स्त्री : दान ही नहीं, आदान भी 6
सोनिया द्वारा ई एस आई सी अस्पताल... फ़रीदाबाद के अस्पतालों की दुर्दशा ज्यों की त्यों 8

वर्ष 27 अंक 7 फरीदाबाद, रविवार, 16-28 फरवरी 2014 फोन : - 9999595632 ₹ 2

असीमानन्द से कौन डरता है

समझौता धमाके के षड़यन्त्रकारी असीमानंद के राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से अंतरंगता के साथ संघ प्रमुख मोहन भागवत के भी शामिल होने की स्वीकारोक्ति के बावजूद कोई हलचल क्यों नहीं।

दिल्ली मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

मोहन भागवत : धमाकों की विचारधारा

असीमानंद : विचारधारा की भेंट चढ़ा

समझौता एक्सप्रेस (फ़रवरी 2007), मक्का मस्जिद(मई 2007), अजमेर शरीफ़ (सितम्बर 2007)धमाकों के पीछे एक बड़ी भूमिका रही है। असीमानंद की। इन धमाकों को अंजाम देने वाले संघी दल का मुखिया सुनील जोशी था, जिसकी उसके ही साथियों ने दिसम्बर 2007 में हत्या कर दी थी। जोशी की अंतरंग संघ की 'सन्यासिनी' प्रज्ञा सिंह ठाकुर उपरोक्त मामलों में कई अन्य के साथ जेल में है। हालांकि धमाके अंजाम देने में सुनील जोशी के मुख्य सहयोगी प्रवीण आंग्रे और कुलसांग्रा उसकी हत्या के बाद से गायब हैं।

समझौता बलास्ट की छानबीन हरियाणा पुलिस से शुरू हुई क्योंकि यह पाशविक कृत्य पाकिस्तान को जाने वाली ट्रेन पर पानीपत से गुजरते वक्त हुआ। बाद में तफ़्तीश सी बी आई और अन्त में एन आई ए के हाथों में पहुंची। यह माना जा रहा था कि असीमानंद के संघ के वरिष्ठकर्मी इन्द्रेश और सरसंघचालक मोहन भागवत से करीबी रिश्ते रहे हैं। साथ ही डांग (मध्य प्रदेश व गुजरात सीमा) में ईसाई आदिवासियों के धर्म परिवर्तन में सक्रिय रहने के दौर में असीमानन्द की गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी से भी निकटता रही।

इन्द्रेश का नाम शुरू से आ रहा था। पर मोहन भागवत का नाम अब जाकर असीमानंद ने 'कारवां' की पत्रकार गीता रघुनाथ को जनवरी 2014 में दिये साक्षात्कार में उगला। इस पत्रकार द्वारा असीमानंद का यह पांचवा साक्षात्कार था। वह सबसे पहले 20 दिसम्बर 2011 को पंचकुला कोर्ट में असीमानंद को मिली। बाद में उसने अम्बाला जेल में 10 जनवरी 2012, 22 जून 2013, 9 जनवरी 2014 तथा 17 जनवरी 2014 को असीमानंद से लम्बी बातचीत की। असीमानंद धीरे-धीरे खुलता गया और एक बार मोहन भागवत का नाम 'ऑफ़ द रिकार्ड' लेने के बाद उसने अन्ततः ऑन द रिकार्ड भी ले लिया।

असीमानंद ने जो बताया उसका मोटा-मोटा सार यह है कि उपरोक्त धमाके संघ की जानकारी में किये गये थे। 2005 में मोहन भागवत, जो अभी संघ का सरसंघचालक नहीं बना था, ने असीमानंद की योजना सुन कर कहा था कि मुस्लिम ठिकानों पर बमबारी करना जरूरी है। लेकिन इसे संघ से न जोड़ा जाय।

असीमानंद नवम्बर 2010 में गिरफ़्तार किया गया। दिसम्बर 2010 में उसने दफ़ा 164 के अंतर्गत दिल्ली में न्यायिक मैजिस्ट्रेट को दिये बयान में उपरोक्त मामलों में इकबाले जुर्म भी किया। उसने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को भी शामिल बताया। बाद में, मार्च 2011 में, वह इस बयान से मुकर गया। पर एन आई ए के आरोपपत्र में असीमानन्द की भूमिका प्रमुख षड़यन्त्रकारी एवं उत्प्रेरक की बन कर आती है।

असीमानन्द के साक्षात्कार का वह हिस्सा भी महत्वपूर्ण है जिसमें वह नरेन्द्र मोदी से अपनी एक विशेष मुलाकात का ज़िक्र करता है। मोदी अभी भाजपा का जनरल सेक्रेट्री था और गुजरात में तब केशू भाई पटेल के नेतृत्व में भाजपाई सरकार थी। असीमानंद के मुताबिक मोदी ने उसे बताया कि जल्द ही केशूभाई की छुटी होने वाली है और वह स्वयं गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर होंगे। और तब असीमानंद द्वारा किया जा रहा (धर्मान्तरण का) काम उनका अपना काम हो जायेगा।

अमीमानंद के मोहन भागवत वाले खुलासे और मोदी के ज़िक्र से जो तूफ़ान उठना चाहिये था वह नहीं उठा है। छुटपुट बयान और एक आध मीडिया चर्चा से ज़्यादा कुछ और नहीं नज़र आया। इसके बरक्स असीमानंद की संघी पृष्ठभूमि के संदर्भ में भागवत व मोदी को लेकर उसका खुलासा विश्वासयोग्य ही कहा जायेगा। संघ में वह 'वनवासी कल्याण आश्रम' जो आदिवासियों के बीच हिन्दुत्व के प्रचार की शाखा है, में सक्रिय रहा। पहले अंडमान में काम करने के बाद उसे डांग (गुजरात) में काम करने की जिम्मेदारी संघ द्वारा दी गयी। इस दौरान उसकी गतिविधियां इतनी उग्र थीं कि तत्कालीन भाजपाई केन्द्रीय गृहमंत्री आडवाणी को गुजरात के मुख्यमंत्री केशूभाई पटेल को उस पर लगाम लगाने का निर्देश देना पड़ा। लिहाज़ा असीमानंद के लिये स्वाभाविक रहा होगा कि वह भागवत और मोदी जैसे कट्टर संघियों के सम्पर्क में रहता।

सवाल है कि क्या मोहन भागवत पर हाथ डालने की हिम्मत केन्द्र की कांग्रेसी सरकार की है? एन आई ए सीधे केन्द्र सरकार (गृह मन्त्रालय) के नीचे काम कर रही है। एक बार गृह मंत्री शिंदे ने संकेत भी दिया कि इस खुलासे पर कुछ हिलजुल हो सकती है। पर एन आई ए ने स्वयं मामले में और छानबीन से इन्कार करने वाला बयान जारी किया है।

असीमानंद के गीता रघुनाथ को दिये साक्षात्कारों से कुछ बातें और निकलकर सामने आती हैं। एक तो यह कि उसकी शुरू से संघ के वकीलों द्वारा पैरवी की जा रही है। इसका मतलब यह भी हुआ कि ये वकील उसे घेरघोट कर संघ का नाम न लेने के लिये दबाते रहे होंगे। दूसरी बात यह कि सामने फ़ांसी की सज़ा या लम्बी जेल देख कर अब असीमानंद को लग रहा होगा कि इन्द्रेश और भागवत ने उसे उसके हाल पर छोड़ दिया है।

शेष पेज 2 पर

कोल्ड स्टोरेज में वंजारा का बयान

यूं गुजरात की फ़र्जी मुठभेड़ों के मुख्य अभियुक्त डी आई जी पुलिस वंजारा ने कुछ दिनों पूर्व, वर्षों की जेल सड़ाई से घबराकर, मोदी के दाहिने हाथ अमित शाह का नाम लिया था। शाह, उस दौर में गुजरात का गृह राज्य मन्त्री होता था। और वंजारा के मुताबिक सारी मुठभेड़ें उसके संज्ञान में हुईं। पर सी बी आई इस पर चुप्पी लगा गई और इशरत जहां मामले में दाखिल अन्तिम आरोपपत्र में अमित शाह का नाम नदारद है। ■

मोदी चायः जी चाहता है मुंह पर...

(एक चायवाले से बातचीत पर आधारित)

मोदी जी भी कभी हमारे जैसे चायवाले थे। सुनकर अच्छा भी लगा। पर 10 साल से वे गुजरात के मुख्यमंत्री हैं, लेकिन वहां के चायवालों की हालत तो जस की तस है।

यह कैसा गोरख धंधा है भैया। एक चायवाला तो राज कर रहा है, प्रधानमंत्री बनने की दौड़ में लगा हुआ है। और एक हमारे जैसे हज़ारों चायवाले हैं जो सारी ज़िंदगी सड़क की धूल फांकते बिताते हैं और यही धूल अपने ग्राहकों को भी पिलाते हैं। ऐसे में जब मोदी जी खुद को चायवाला कहते हैं तो हम जैसे चायवाले खुद को अपमानित महसूस करते हैं।

आजकल तो जगह-जगह मोदी के चेलों ने 'मोदी चाय' के स्टाल लगाकर खूब ढिंढोरा पीटना शुरू कर रखा है। क्या उन्हें दिखाई नहीं देता कि इस तरह से हमारी ग़रीबी और लाचारी का कैसा भयानक मज़ाक उड़ा रहे हैं। कभी-कभी मन करता है कि हम भी अपनी इस चाय की झोंपड़ी के आगे एक कुर्सी डाल लें और उस पर 'मुख्यमंत्री' लिखकर बैठा करें। हो सकता है इससे मोदी जी और उनके चेल-चपाटों को कुछ शर्म आ जाय।

हम भी इतना तो जानते हैं कि मोदी जी को मुख्यमंत्री बनवाने में किनकी सिफ़ारिश और किनका पैसा लगा है। आपको गुजरात में आपके संघी भाइयों ने कुर्सी पर बैठाया था। कुर्सी मजबूत करने के लिये आपने ग़रीब मुसलमानों का वैसे ही कत्लेआम कराया जैसे किसी जमाने में कांग्रेसी राजीव गांधी की शह पर सिखों का हुआ था। इसके बाद दोस्ती हम चायवालों से तो कभी रही नहीं। बड़े-बड़े कारखानेदार और पैसे वाले आपके दोस्त बनते गये। उन्हीं के दम पर आपकी नेतागिरी चमकती गई। उन्हीं के लिये आपने कानून व नीतियां बनाईं। हमें तो आपने कभी भूले से भी याद नहीं किया। पिछले 10 साल के अपने राज में क्या आपने चायवालों की भलाई का कोई कानून बनाया है? अरे, कभी हमारा सम्मेलन बुलाकर झूठ-मूठ के वादे ही कर लेते!

मोदी जी से हम कोई शिकवा-शिकायत नहीं कर रहे। शिकवा-शिकायत उससे की जाती है जो अपना हो। मोदी जी तो हर तरह से अमीरों के हो चुके हैं। हम तो बस यह चाहते हैं कि 'मोदी चाय' के यह जो हम चायवालों का अपमान किया जा रहा है वह बन्द हो। इतनी कृपा हो जाय तो हम मोदी जी के आभारी रहेंगे।

-आनंद कुमार

ख़बर दार

भारत रत्नः न देने वाले को 'भरम' न लेने वाले को 'शरम'

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

क्रिकेटर सचिन तेंदुलकर और वैज्ञानिक सी एन राव को भारत रत्न सोच समझकर ही दिये गये हैं। शासकवर्ग अपने सम्मान यूं ही नहीं बांटता है।

भारत रत्न पाने के बाद न तेंदुलकर ने न राव ने शोषित-वंचित करोड़ों भारतीयों की तरफ़दारी की कोई बात मुंह से निकाली है।

निकालते तो वे पहले भी नहीं थे पर भारत रत्न मिलने के बाद भी उन्होंने ऐसा कोई दिखावा करना भी मुनासिब नहीं समझा। जाहिर है 'शाइनिंग इंडिया' के हितों व सरोकारों के प्रति समर्पित ये दोनों विशिष्ट व्यक्ति किसी शरम का शिकार नहीं हैं। वैसे ही जैसे भारत सरकार किसी भरम का शिकार नहीं है।

तेंदुलकेर ने अरबों रुपये अमीरों के लिये बनाये गये बाज़ार की मार्फ़त कमाये हैं। उन कारों, उन घड़ियों, उन कपड़ों, उन अन्य उपभोक्ता वस्तुओं, जिनका

तेंदुलकर विज्ञापन करते आये हैं, का इस देश के आम आदमी का कुछ लेना-देना नहीं होता है। जिस वर्ग द्वारा आम आदमी को मुनाफ़ाखोरी और भ्रष्टाचार की मार्फ़त लूटा जाता है, तेंदुलकर उसी का गुणगान करते मिलेंगे। कभी भूले से भी उन्होंने सट्टाखोर व ऐय्याशी में डूबे क्रिकेट प्रशासकों के विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा।

उन्हें हमेशा मुस्कराता देखकर कौन कह सकता है कि इस भारत रत्न के अधिकांश देशवासी भूख, अशिक्षा, अन्याय व लाचारी, शोषण के शिकार हैं। इस भारत रत्न को न देश को लूटने वाले शासकों की हरकतों में कोई खोट नज़र आता है और न ही देश की संपदा को हड़पने वाले तमाम कार्पोरेटों की नीयत में। जनता के प्रति ऐसा निर्विकार व्यक्तित्व है तेंदुलकर का कि यदि उन्हें अमीरों का बाज़ार गर्म बनाये रखने के लिये भारत रत्न भी छोड़ना पड़े तो वे छोड़ने में परहेज नहीं करेंगे।

राव भी भला पीछे कैसे रहें। उन्हें भारत रत्न से इसलिये नवाजा गया है कि मंगलयान भेजने में उनकी प्रमुख भूमिका रही है। मंगलयान प्रोजेक्ट पर 500 करोड़ लगे। पर भारत रत्न घोषित होते ही इस बात का रोना रोया कि सरकार ऐसे 'राष्ट्रीय गौरव' के प्रोंजेक्टों पर हज़ारों करोड़ क्यों नहीं खर्च कर रही? राव की इस चिन्ता को देखकर लगता है कि जैसे भारत में अन्य सभी समस्यायें समाप्त हो चुकी हैं।

शेष पेज 2 पर